पाठ 5

बेणेश्वर की यात्रा

मैं ने गत वर्ष अख़बार में पढ़ा था बेणेश्वरधाम! यहाँ माघ शुक्ल एकादशी से कृष्ण पंचमी तक मेला भरता है। गुजरात, मध्यप्रदेश तथा राजस्थान के लोग इसमें भाग लेते हैं। समाचार बहुत ही रोचक था। मेरे मन में यह मेला देखने की प्रबल इच्छा जाग्रत हो उठी। 'हाँ' कहते साल बीत गया। मैंने तैयारी तो कर ही रखी थी। आखिर माघ शुक्ल एकादशी नजदीक आ ही गई। मैं बेणेश्वरधाम के लिए रवाना हुआ।

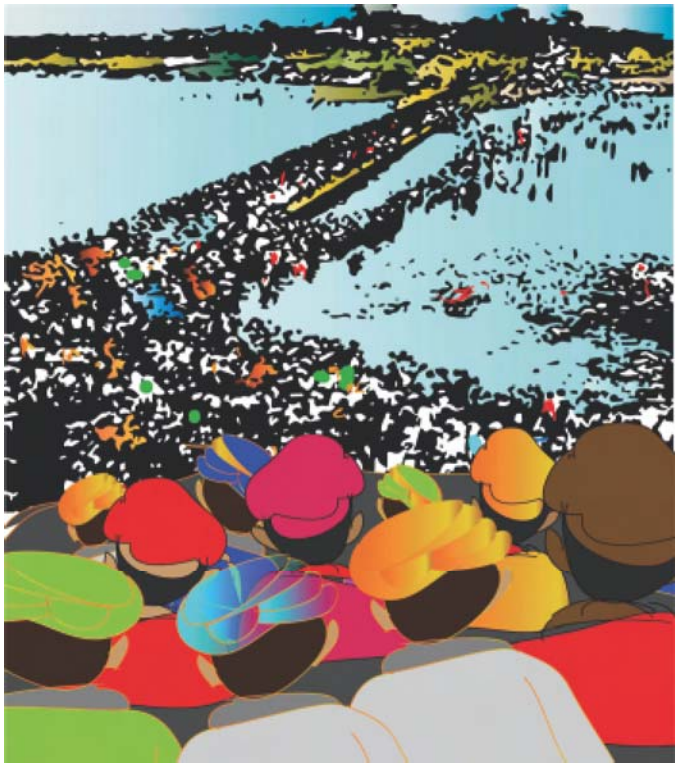

चाँदनी रात थी। मैं बस में सवार था। बस अरावली की पहाड़ियों को चीरती हुई बेणेश्वरधाम की ओर बढ़ रही थी। यह तीर्थ स्थान डूँगरपुर और बाँसवाड़ा ज़िलों की सीमा पर स्थित है। इसे आदिवासियों का कुंभ कहा जाता है।

बस बाएँ ओर मुड़ी। 'मावजी महाराज नी जै' की आवाज़ के साथ मेरी नींद खुल गई। लोग आपस में बातें कर रहे थे।

''अरे, हाबलो आवीग्यू! हवै तो बेणेश्वर धाम सो किलोमीटर रइ ग्यू।''

''यह तो सोम, जाखम तथा माही नदियों के संगम पर बने एक टापू पर स्थित है न?''

''इयाँ बणैला शिवजी ना मंदर नै 'बेणका ईश्वर' कएं हैं!''

''अरे, इसलिए तो इस स्थान का नाम बेणेश्वर पड़ा है!''

सब हँस पड़े। कुछ ही देर में साबला आ गया। बस रुक गई। आज माघ शुक्ल एकादशी है। आज से मेला शुरू हो रहा है। यह दस दिन तक चलेगा। पंचमी को पूरा होगा। मुख्य मेला पूर्णिमा को रहता है।

मैं बेणेश्वर टापू पर पहुँचा। यह लगभग 240 बीघा क्षेत्र में फैला हुआ टापू है। यहाँ कई मंदिर हैं। मेरी नज़र शिलालेखों पर पड़ी।

इसके बाद मैंने शिव मंदिर देखा। इसका निर्माण डूँगरपुर के महारावल आसकरण ने लगभग 500 साल पहले करवाया था। यह बहुत पुराना हो गया था, इसलिए इसकी मरम्मत करवाई गई थी।

कहते हैं–इसी मंदिर में बैठकर मावजी महाराज ने अपना 'चोपड़ा' लिखा था। मावजी इस क्षेत्र के प्रसिद्ध संत हुए हैं। इनका जन्म अठारहवीं शताब्दी में साबला (डूँगरपुर) में हुआ था। लोग इनको कृष्ण का अवतार मानते हैं। मावजी महाराज ने सोमसागर, प्रेमसागर, मेघसागर, रतनसागर एवं अनंतसागर नामक पाँच ग्रंथों की रचना की है। इनको वागड़ी भाषा में 'चोपड़ा' कहा जाता है। उनके चोपड़े में अनेक भविष्यवाणियाँ लिखी हुई हैं। ऐसा विश्वास है कि इस चोपड़े की भविष्यवाणियाँ अब तक सही साबित हुई हैं। मुझे यह भी बताया गया कि मावजी की मुख्य गादी साबला में है। मावजी के बाद उनकी पुत्रवधू जनकुँवरी गादी पर बैठी। वह लगभग 80 साल तक गादीपति रही।

उन्होंने ही हरि मंदिर (कृष्ण मंदिर) बनवाया था। कहा जाता है कि यह वह स्थान है जहाँ मावजी महाराज बैठकर अपनी साधना करते, बाँसुरी बजाते और गायें चराते थे। बेणेश्वर टापू पर वागड़ क्षेत्र के लोगों ने ब्रह्माजी का मंदिर भी बनवाया है। इस प्रकार यहाँ त्रिदेव (बह्मा, विष्णु, महेश) के मंदिर हैं। इनके अलावा यहाँ अन्य देवों के मंदिर भी बने हुए हैं।

साबला गादी के महंत जी ने हरिमंदिर पर झंडा फहराकर मेले की शुरुआत की। चारों तरफ मावजी महाराज की जय–जयकार हो रही थी।

बेणेश्वर टापू पर चहल–पहल बढ़ गई थी। आदमी ही नहीं औरतें भी! बालक ही नहीं बालिकाएँ भी! जवान ही नहीं बूढ़े भी! गरीब ही नहीं अमीर भी! सब तरह के लोग थे। अब तो यहाँ विदेशी पर्यटक भी खूब आने लगे हैं।

मैं यहाँ एक दिन रुककर लौट जाना चाहता था; किंतु यहाँ के अनोखे वातावरण ने मुझे पूर्णिमा तक रुकने के लिए मजबूर कर दिया। मेला स्थल पर दुकानें और मनोरंजन के भरपूर साधन थे। दुकानों में खेती और गृहस्थी के लिए आवश्यकता की वस्तुएँ थीं। वहाँ बच्चों के लिए गुब्बारे और खिलौने, धनुष और तीर, झूले–चकरी और सर्कस, मदारी तथा जादू के खेल भी थे। सब उनका आनंद ले रहे थे। मेले में पुलिस विभाग के कर्मचारी तथा बालचर अपनी सेवाएँ दे रहे थे।

इस मेले में विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम चल रहे थे। उनमें अलग–अलग संस्कृति की झलक थी। सभी धर्मों के प्रति सम्मान था। खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। यहाँ तीरंदाजी, गैर नृत्य एवं रासलीला के कार्यक्रम लोगों के लिए विशेष आकर्षण के केंद्र थे। उनके कलाकारों की रंग–बिरंगी भड़कीली पोशाकें सबका ध्यान खींच रही थीं। आदिवासी लड़के–लड़कियाँ समूह में लोक गीत गा रहे थे। ये गीत वागड़ी भाषा में थे। चाहे वे गीत मुझे समझ में न आए हों; किंतु उनके सुरीले स्वर को मैं अभी तक नहीं भुला पाया हूँ। उन गीतों में उनके सीधे–सादे जीवन की झलक दिखती है।

यह स्थान डूँगरपुर ज़िले की साबला पंचायत समिति में स्थित है। अतः इस मेले की सारी व्यवस्था उसी की ज़िम्मेदारी है। इसमें डूँगरपुर और बाँसवाड़ा ज़िले के प्रशासन का पूरा सहयोग रहता है। मुझे पता ही नहीं लगा और पूर्णिमा आ गई।

धूम–धाम से महंतजी की सवारी निकली। गाजे–बाजे, ढोल–ढमाके, इकतारा, तंबूरा, ढोलक, मंजीरे आदि की धुन सुनते ही बनती थी। रंग–बिरंगी पताकाएँ थीं। सवारी सोम–माहीसागर संगम स्थल पर आबूदरा नामक स्थान पर पहुँची। महंतजी हरि मंदिर में पधारे। वहाँ उन्होंने पूजा–अर्चना की।

मुझे किसी ने बताया था कि यहाँ की रग–रग में यह पंक्ति रची–बसी है। ''माहीसागर नु पाणी नें मावजी नीं वाणी।'' एक बार फिर आकाश मावजी के गगनभेदी जयकारों से गूँज उठा।

पूर्णिमा के दिन आदिवासियों की संख्या सबसे अधिक थी। कई लोगों के हाथों में 'सउड़ी' थी। उसमें उनके परिवार के उन लोगों के 'फूल' (अस्थियाँ) थे, जिनका बीते वर्ष में निधन हो गया था। उन्होंने संगम–स्थल पर अपनी युगों पुरानी परम्परा के अनुसार उन अस्थियों को प्रवाहित किया। उसके बाद उन्होंने स्नान किया, खाना बनाकर खाया और घर लौट गए।

मैं भी बेणेश्वरधाम की मीठी यादों को लेकर लौट आया।

"बेणेश्वर में बेण (बाँस) के पेड़ अधिक होते थे।
कहते हैं कि यहाँ दैत्यराज बलि ने यज्ञ किया था।"

शब्दार्थ

प्रबल	– दृढ़, ताकतवर	कएं	– कहते हैं
टापू	– जमीन का वह भाग जो चारों ओर से जल से घिरा हो।		
शिलालेख	– पत्थरों पर लिखे गए लेख	प्राचीन	– बहुत पुराना
जन समूह	– लोगों का समूह	संगम	– मिलने का स्थान
हवै	– अब	सो	– छह
हाबलो	– साबला (जगह का नाम)	आवीग्यू	– आ गया
रइ ग्यू	– रह गया	इयाँ	– यहाँ
बणैला	– बना हुआ	मंदर	– मंदिर

अभ्यास कार्य

पाठ से

सोचें और बताएँ

1. बेणेश्वर धाम का मेला कब भरता है?
2. मेले में कौन–कौनसे प्रदेश के लोग आते हैं?
3. मावजी का जन्म कहाँ हुआ था?

लिखें

नीचे लिखे शब्दों का प्रयोग करते हुए रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(साबला, पूर्णिमा, प्रेम सागर, बेणेश्वरधाम)

1. बेणेश्वर का मुख्य मेला ..... को भरता है।
2. ..... को आदिवासियों का कुंभ कहा जाता है।
3. मावजी महाराज का जन्म ..... में हुआ था।

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. बेणेश्वर किन–किन नदियों पर स्थित है?
2. शिव मंदिर किसने और कब बनवाया था?
3. मेले की सारी व्यवस्थाएँ किसके निर्देशन में होती हैं?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. मावजी महाराज द्वारा रचित ग्रंथों के नाम लिखिए।

2. मावजी के बाद गादी पर कौन बैठी?
3. मेले की शुरुआत कैसे होती है?

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

1. मेले में आदिवासियों की संख्या पूर्णिमा के दिन सबसे अधिक क्यों होती है? कारण सहित उत्तर लिखिए।
2. बेणेश्वर मेले का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

भाषा की बात

1. बालक ही नहीं बालिकाएँ भी! जवान ही नहीं बूढ़े भी! गरीब ही नहीं अमीर भी! सब तरह के लोग थे। वाक्य में 'ही..... भी' का प्रयोग हुआ है। आप भी ऐसे पाँच वाक्य बनाइए जिसमें 'ही..... भी' का प्रयोग हुआ हो।
2. मावजी महाराज द्वारा लिखित पाँच ग्रंथों को 'चोपड़ा' कहा जाता है। दिवंगत लोगों की अस्थियों को 'फूल' कहा जाता है। मिट्टी से निर्मित छोटे बर्तन को 'सउड़ी' कहा जाता है, जिसमें आदिवासी अपने पूर्वजों की अस्थियाँ रखते हैं। आँचलिक भाषा में ऐसे अनेक शब्द प्रचलित होते हैं जो एक विशेष अर्थ को व्यक्त करते हैं। अपनी भाषा से ऐसे कुछ शब्दों का चयन कर उनके अर्थ लिखिए।
3. 'मुझे पता ही नहीं लगा और पूर्णिमा आ गई।' इस बात को हम इस प्रकार भी लिख सकते हैं–'मुझे पता ही नहीं लगा। पूर्णिमा आ गई।' इस प्रकार के वाक्यों को संयुक्त वाक्य कहा जाता है। संयुक्त वाक्य में वाक्यों को 'और' 'तथा' 'या' आदि से जोड़ा जाता है। आप भी इसी प्रकार के पाँच वाक्य बनाइए।
4. 'मिश्र वाक्य' भी वाक्य का एक भेद है। आप अपने शिक्षक से मिश्र वाक्य के बारे में जानकारी प्राप्त कीजिए।

पाठ से आगे

1. आपने अब तक कौन–कौनसे मेले देखे हैं? किसी एक मेले का वर्णन कीजिए।
2. कल्पना कीजिए कि आप परिवार के साथ मेला घूमने गए हो। वहाँ भीड़–भाड़ में आप अपने परिवार से बिछुड़ गए। ऐसी स्थिति में आप क्या करेंगे?

यह भी करें

1. बेणेश्वर में बेण के पेड़ अधिक होते थे। कहा जाता है कि यहाँ दैत्यराज बलि ने यज्ञ किया था। दैत्यराज बलि की अंतर्कथा ढूँढ़कर पढ़िए।
2. आप कभी बेणेश्वर जाएं तो मावजी महाराज द्वारा लिखित ग्रंथों को संग्रहालय में पढ़िए।

जानें, गुनें और जीवन में उतारें

औरों को हँसते देखो मनु, हँसों और सुख पाओ।
अपने सुख को विस्तृत करलो, जीवन सफल बनाओ।